



स्वतंत्रता दिवस 2020
के पावन पर्व पर
माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन
एवं
कृषक सम्मान समारोह



डा० डी०आर० सिंह
कुलपति

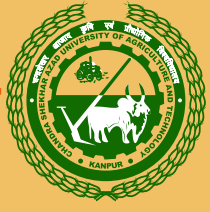


चन्द्रशेखर आजाद
कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर



74वें

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन



74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन एवं कृषक सम्मान समारोह

सम्माननीय कृषक बन्धुओं, शिक्षक, वैज्ञानिक, कर्मचारीगण एवं मेरे साथियों, आज हम अपना 74वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। इस अवसर पर भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों जिनके द्वारा वर्षों के संघर्ष के बाद ब्रिटिश शासन से हमें आजादी मिली, मैं अपने आपको गौरान्वित महसूस कर रहा हूँ कि उन स्वतंत्रता सेनानियों में से एक अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जिनके नाम पर यह विश्वविद्यालय बना है, उसके कुलपति बनने का मुझे अवसर मिला। विश्वविद्यालय परिवार की ओर से मैं उन सभी योद्धाओं को नमन करता हूँ, श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ। जिनकी वजह से हम इस दिन को मना रहे हैं। मेरी आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाईयां।

आजादी के बाद से देश में बहुआयामी विकास हुआ है तथा इसमें कुछ शानदार उपलब्धियां विश्व पटल पर अंकित हैं। इस कोरोना काल ने हमें अपने आपको पुनः परिभाषित एवं प्राथमिकताओं में बदलाव के लिए प्रेरित किया है। कोरोना महामारी से निपटने में जहां एक तरफ मेडिकल डाक्टर, नर्स आदि मोर्चा सम्भाले हुये हैं वहीं दूसरी तरफ जन-मानस के स्वास्थ्य, रक्षा, भोजन आदि जीवन-दायिनी आवश्यकताओं एवं खाद्य श्रृंखला को मजबूती प्रदान करने में हमारे कृषक बन्धुओं का अतुलनीय योगदान है। हमारी खाद्य पोषण एवं आन्तरिक सुरक्षा में इन योद्धाओं की भूमिका अति प्रशंसनीय रही है। इसे दृष्टिगत रखते हुये मेरे मन में आया कि क्यों न हम सब मिलकर इस स्वतंत्रता दिवस पर अपने कृषक भाइयों को सम्मानित करें जिन्होंने कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में विविध विधाओं का प्रयोगकर कीर्तिमान बनाये है साथ ही अन्य कृषक भाइयों के लिए प्रेरणास्रोत बने है। आपको हम बताना चाहते हैं कि कृषि ही हमारा जीवन है पशु हमारा धन है। यह वाक्य हमारे मुख्य भवन पर अंकित है। यह इस बात का ध्योतक है कि हम कर्म, वचन, सृजन, से कृषि विकास एवं आपके स्वाबलम्बन के लिए समर्पित हैं।

यह आप लोगों की सतत् लगन मेहनत एवं नवीन प्रजातियों, एवं तकनीक ग्राह्यता ही है। जिसके द्वारा आप हमने शोध एवं विकास के क्षेत्र में शानदार सफलताएँ हासिल की हैं। हमने अधिक उपज देने वाली रोग व्याधि अवरोधी प्रजातियों, सिंचाई सुविधा एवं संसाधनों में वृद्धि एवं कृषि उत्पादक अवयवों की सुगम आपूर्ति, आधारभूत ढांचों के सुदृणीकरण द्वारा स्वाधीन होने के बाद से खाद्यान्नों में 5 गुना, औद्योगिक फसलों में 9 गुना, मछली में 12.5 गुना, दुध में 9 गुना एवं अण्डा उत्पादन के क्षेत्र में 39 गुना वृद्धि हासिल हुई है, इस वृद्धि में हमारे विश्वविद्यालय एवं प्रदेश के किसानों का प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

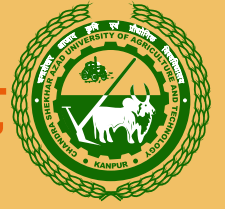
हमारा देश आज खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं अपितु अब हम इसे विभिन्न देशों को निर्यात भी कर रहे हैं। बासमती चावल निर्यात में विश्व में प्रथम स्थान तथा कुल कृषि वस्तुओं के निर्यात में 21 प्रतिशत की साझेदारी रखती है। यह सफलता हमें अपने कृषक भाइयों के द्वारा नयी बासमती प्रजातियों को त्वरित रूप से अपनाने के कारण ही मिली है। मसालों के निर्यात में भी हम अग्रणी है।

खाद्यान्न उत्पादन में 11.8% कृषि अन्तर्गत क्षेत्रों के साथ 20% खाद्यान्न उत्पादन कर हमारा प्रदेश देश में प्रथम स्थान रखता है। तिलहन, दलहन उत्पादन के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया गया है। नेशनल मिशन ऑन एग्रीकल्चरल एक्सटेन्सन एंड टेक्नोलॉजी के अन्तर्गत कृषि प्रसार, ई-गर्वनेन्स, मेकेनाइजेसन, सीड एंड प्लान्टिंग मेटेरियल के लिए भारत सरकार द्वारा प्रदेश को वित्तीय सहायता दी जा रही है। कृषि यन्त्रीकरण योजना के अन्तर्गत विभिन्न यन्त्रों पर 40 से 80 % अनुदान दिया जा रहा है।

नेशनल मिशन फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर के अन्तर्गत प्रदेश को भारत सरकार द्वारा मिशन मोड में रेनफेड एरिया डेवलपमेन्ट, परम्परागत कृषि विकास, नमामि गंगे, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजनाओं के माध्यम से सतत् कृषि उत्पादकता को जैविक खेती के रूप में बढ़ावा देना है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत हर खेत को पानी की व्यवस्था के साथ ही पर-ड्रॉप मोर क्रॉप एवं इन्टीग्रेटेड वाटरसेड डेवलपमेन्ट प्रोग्राम पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।



स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन



प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना द्वारा अनुदान की DBT द्वारा सीधे किसान के खातों में दी जा रही है। जिसकी सहायता से कृषक परिवार की लवलीहुड एवं सही समय से कृषि इनपुट की खरीददारी में सहायता मिल रही है। प्रदेश सरकार ने भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में सोलर फोटो वोल्टैइक सिंचाई पम्प योजना चलाई जा रही है। बीहड़ एवं बंजर भूमि सुधार कर कृषि योग्य बनाकर भूमिहीन कृषकों को देने के लिए पं० दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना, वर्षा जल संचयन हेतु खेत तालाब एवं स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली पर भी सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

भारत एवं दक्षिण एशिया के देशों के लिए चावल अनुसंधान कार्य हेतु अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपींस का प्रथम क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणासी में स्थापित किया गया है। इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय आलू अनुसंधान केन्द्र पेरू द्वारा आगरा में अपना क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। इससे प्रदेश के कृषि विकास में आशातीत सफलता मिलेगी। इस कोरोना काल में आर्थिक एवं मानव संसाधनों की कमी से हम सभी जूझ रहे हैं। फिर भी विश्वविद्यालय ने अपने विकास की गति को कम नहीं होने दिया है। हमने इसी समय कई महत्वपूर्ण कार्यों को विभिन्न संस्थाओं/समाज सेवियों के माध्यम से सम्पादित किये हैं। रोटरी क्लब इंडस्ट्री की मदद से 10 छात्रावासों में ब्रांडेड वाटर कूलर की स्थापना, मुख्य द्वार से सड़क के दोनों तरफ ऐतिहासिक तालाब तक सौन्दरीकरण एवं इंटरलॉकिंग का कार्य चल रहा है। इसके साथ ही छात्राओं हेतु मुख्य भवन में महिला कर्मकर्म रूम की स्थापना का कार्य शीघ्र प्रारम्भ हो रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा शोध प्रसार एवं अनुभव साझेदारी को जन-मानस, छात्र-छात्राओं, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, प्लानर तक पहुँचाने हेतु "कृषि कायाकल्पिका" नामक पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन माननीय कृषि मन्त्री श्री सूर्य प्रताप साही द्वारा किया जा चुका है। पोस्ट कोविड-19, ट्रांसफॉर्मेशनल एग्रीकल्चर बुक भी प्रकाशित हो चुकी है।

कृषकों को नवीनतम तकनीकी, व्यवसाय, व्यापार सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकार ने विभिन्न एप बनाये हैं जिनके द्वारा कृषक भाई सही समय, सही उत्पादन अवयवों, सही तरीका, सही प्रबन्धन एवं सही बाजार के बारे में त्वरित जानकारी प्राप्त कर अपनी उपज एवं आय बढ़ाने में मदद ले सकते हैं इन एपों में PUSA KRISHI MOBILE APP द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा विकसित तकनीकी, प्रजातियों विकास आदि की जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है। KISAN SUVIDHA MOBILE APP द्वारा जलवायु, पादप संरक्षण, कृषि उत्पाद डीलर, बाजार एवं कृषि परामर्श सेवाओं की जानकारी, CROP INSURANCE MOBILE APP द्वारा फसल बीमा से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी, AGRI MARKET MOBILE APP द्वारा 50 किमी० की परिधि में बाजार भाव की जानकारियां सुगमता से प्राप्त की जा सकती है।

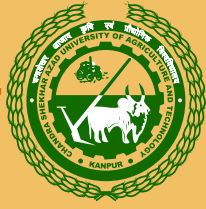
भारत सरकार द्वारा FARMERS' PORTAL जिसमें बीज खाद उर्वरक, कीटनाशकों, क्रेडिट, कृषि डीलरों की नवीनतम जानकारियों, m Kisan Portal टैक्सट एवं वॉईस लक्षित जानकारियों, CROP MANAGEMENT PORTAL पर फसल बीमा, सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारियों, Participatory Gurantee System of India (PGS) Portal पर सहभागी प्रोग्राम एवं जैविक खेती हेतु प्रमाण पत्र आदि की जानकारियों को बड़ी ही सहजता के साथ प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा किसान काल सेन्टर पर निःशुल्क कृषि से सम्बन्धित जानकारियां प्राप्त की जा सकती है। किसानों की आय में वृद्धि एवं जीविकोपार्जन में सुधार हेतु भारत सरकार द्वारा कई महत्वाकांक्षी योजनाओं को प्रारम्भ किया गया है इसमें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, मिसन फार इंटिग्रेड डेवलपमेंट आफ हार्टीकल्चर स्कीम, ग्रामीण भण्डार योजना, राष्ट्रीय गोकुल मिसन, स्टूडेंट रेडी, आर्या, फारमर फस्ट प्रमुख हैं अभी हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी ने किसान उत्पादक संगठनों (FPO) के नेटवर्क एवं किसान रेल की शुरुआत की है। इससे किसानों को अपने उत्पादों का उचित मूल्य मिलने में बड़ा सहयोग मिला है।

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन की मानव लालसा ने पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ने की दिशा में एक बड़ी भूल की है। जिसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन अति-वृष्टि, अल्प-वृष्टि, अनियन्त्रित, असंतुलित वर्षा पैटर्न तथा जैविक आपदाओं में कोरोना महामारी तथा टिड्डियों का आक्रमण, हमारे सामने ज्वलन्त उदाहरण आने लगे हैं। आज हमें पर्यावरण को संरक्षित, संवर्धित एवं समर्पित करना ही होगा वरना आने वाली नस्लें हमें कभी माँफ नहीं कर पायेगी। हमारा अटूट विश्वास है कि इस कार्य में हमारे



74^{वें}

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन



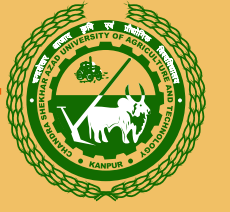
कृषक बन्धु सदैव से अपना योगदान देते आये हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी की पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन के प्रति गहरी सोच, संवेदना एवं आवाहन की कड़ी में अपने कृषक बन्धुओं, अधिकारियों, कर्मचारियों छात्र-छात्राओं से अनुरोध करता हूँ कि इसकी दिशा में स्वयं का ही योगदान नही अपितु जन सहभागिता को भी प्रेरित करने का कार्य करें। जल संरक्षण के क्षेत्र में **Per drop more crop** यानि प्रतिबूंद पानी से अधिक फसल अवधारणा को साकार करना ही होगा। जल संरक्षण तकनीकी के अन्तर्गत प्रत्येक खेत की मेंड बन्दी, खेतों के आस-पास छोटे-2 तालाब, कुँओं, फसल उत्पाद की आधुनिक सस्य तकनीकी एवं सिचाई पद्धति को अपनाना होगा। आज हमें प्रत्येक गांव में न्यूट्रीफार्मिंग, न्यूट्रीगार्डनिंग के साथ ही **climate smart village** जलवायु स्मार्ट गांव की दिशा में अपने अनुसंधान एवं प्रसार कार्य को अपने मुख्य एजेण्डा में लेना आवश्यक है। हमारे विश्वविद्यालय ने इस दिशा में अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। पर्यावरण के प्रति छात्रों की सकारात्मक सोच एवं समर्थन के लिए हमने तय किया है, कि प्रत्येक छात्र-छात्राओं को प्रति सेमेस्टर कम से कम एक पौधा अवश्य लगाने के साथ ही उसकी देखभाल करना अनिवार्य होगा और इसे उनकी प्रयोगात्मक परीक्षा में सम्मिलित कर कुरीकुलम का अंग बना दिया जायेगा। इस वर्ष नव-प्रवेशित छात्र-छात्राओं के पठन-पाठन की शुरुआत उनके द्वारा अपने नाम से एक पौधे के रोपण से ही होगी। एन0सी0सी0, एन0एस0एस0 के छात्र छात्रायें अपनी शुरुआत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गये गांवों से करने का भी विश्वविद्यालय द्वारा निर्णय ले लिया गया है।

शोध

- विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों में अब तक 290 से अधिक उन्नतशील प्रजातियां विकसित करने का कीर्तिमान स्थापित किया गया है, जो कृषकों में काफी लोकप्रिय है तथा उत्पादन बढ़ाने में विशेष योगदान प्रदान कर रही है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूँ में उजियार नेपाल में लोकप्रिय है, के दृष्टिगत नेपाल गणराज्य द्वारा इस प्रजाति को आयुच्युता के नाम से अंगीकृत किया है। गेहूँ में देवा प्रजाति बांग्लादेश में तथा मसूर में मलिका प्रजाति दक्षिण कोरिया में अधिक क्षेत्रफल पर बोयी जा रही है।
- विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों में एक, तोरिया में एक, मूंग में एक, मसूर में एक व अलसी में एक कुल पांच प्रजातियों के Notification हेतु प्रस्ताव Central Sub-committee on crop standards, Notification and Release of Varieties for Agricultural Crops कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन नई दिल्ली को प्रेषित किये गये हैं।
- विश्वविद्यालय में नवीनतम रूप से जैव प्रौद्योगिक विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिक मंत्रालय, भारत सरकार परियोजनायें Evaluation of Linseed Germplasm for major biotic stress (Alternaria blight), Evaluation of Linseed Germplasm for major biotic stress (Salt stresses), Wide hybridization and genetic enhancement, Phenotyping of entrie linseed germplasm collection conserved at National gene bank for agro-morphological trails, Design and development of autonomous robot for crop monitoring and localised pest Neutralisation धनराशि रु 272.4842 लाख की स्वीकृति हुई है, जिनके परिणामों से विद्यार्थी एवं कृषक लाभान्वित होंगे।
- कोराना अवधि में विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं वैज्ञानिकों ने 20 शोध पत्रों को विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जनरलर्स जिनकी नास रेटिंग 6 से अधिक है, में प्रकाशित किये गये हैं।
- विश्वविद्यालय को आई0सी0ए0आर0 द्वारा Centre for Advanced Agricultural Sciences & Technology on Nutritional Crops परियोजना के अन्तर्गत कोविड महामारी के कारण लॉकडाउन के दौरान पांच राष्ट्रीय वेबिनार तथा दो ऑनलाइन राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, तीन नेशनल ट्रेनिंग आयोजित किये गये जिसमें एम0एस0सी0 व पी0एच0डी0 के छात्रों उद्यमियों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा संकाय सदस्यों ने प्रतिभाग किया।



स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन



- प्रदेश सरकार द्वारा 02 सेन्टर आफ एक्सीलेन्स गेहूँ एवं शाकभाजी परियोजनाएं स्वीकृत हुई हैं जिनके अन्तर्गत गेहूँ एवं शाकभाजी फसलों में बदलते मौसम हेतु उपयुक्त प्रजाति विकास व सस्य तकनीक विकास पर शोध संसाधन विकसित कर अनुसंधान को नई दिशा दिये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि कर कृषकों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा।
- विश्वविद्यालय में शोध संसाधन सृजन हेतु विभिन्न वित्तीय संस्थाओं को रू0 4447.00 लाख धनराशि की परियोजनायें प्रेषित की गई हैं, जिससे विश्वविद्यालय में उक्त विषयों पर शोध में आशातीत गति प्रदान करने में मदद मिलेगी।
- विभिन्न विभागों से 26 वैज्ञानिकों/शिक्षकों को देश – विदेश के विभिन्न संस्थानों में सेमिनार/सेम्पोजिया में शोध पत्र प्रस्तुत करने हेतु नामित किया गया।
- विश्वविद्यालय में स्थापित डेयरी के जीर्णोद्धार एवं डेयरी तकनीकी के प्रचार-प्रसार व शोध कार्यों को बढ़ावा देने हेतु Tasty Dairy, Kanpur से Memorandum of Understanding से किया गया।
- अरहर की बुवाई 15 सितम्बर पर करने से अधिक उपज 11.00 कु0/हे0 तक प्राप्त की गई हैं।
- बाजरा-चना फसल पद्धति में गोबर की खाद 7.5 टन/हे0 के हिसाब से प्रयोग करने से अधिकतम उपज प्राप्त की गई हैं।
- Metsulfuron+Carfentrazone (Redy Mix) का 50 ग्राम/हे0 की दर से प्रयोग गेहूँ में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण में लाभकारी पाया गया है।
- वर्तमान वित्तीय वर्ष विश्वविद्यालय को प्राइवेट एजेंसी द्वारा इफिकेसी टेस्टिंग (Efficacy Testing) के अन्तर्गत संस्थागत चार्ज के रूप में लगभग रू0 24.00 लाख का राजस्व भी प्राप्त हुआ।

प्रसार

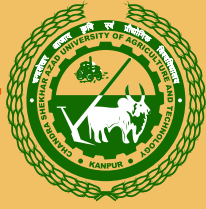
कोरोना काल में उत्पन्न कृषि आधारित समस्याओं को हमने कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण युवकों के कौशल विकास, कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग व व्यवसाय विकसित कर कृषि विकास का आधार तैयार करने की दिशा में कार्य किया है, विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञ सीधे किसानों से समन्वय स्थापित कर इस कठिन परिस्थिति में भी परामर्श सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा पोषक गृह वाटिका पर ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित कर बीज उपलब्ध कराये जा रहे हैं जिससे कृषक परिवारों का पोषण सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। हमारे किसानों को मौसम में अचानक आ रहे बदलाव के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ता है। कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाओं द्वारा कृषि पूर्वानुमान उपलब्ध कराने से विश्वविद्यालय कार्य क्षेत्र के कृषक लाभान्वित हो रहे हैं। हमने इन विषम परिस्थितियों में कानपुर जिला प्रसाशन को गरीब एवं बेसहारा लोगों के भरण पोषण हेतु 40 कुन्तल गेहूँ उपलब्ध कराया है, साथ ही विश्वविद्यालय में विभिन्न निर्माण कार्यों से लगे अप्रवासी श्रमिकों को भोजन आदि की व्यवस्था हेतु जनता रसोई प्रारम्भ की। विश्वविद्यालय ने स्मार्ट हैंडवॉश एवं लो कास्ट सैनेटाइजेशन टनेल का निर्माण करके विश्वविद्यालय के परिसर में स्थापित किया गया जिससे विश्वविद्यालय परिसर को कोविड-19 महामारी से सुरक्षित रखने की दिशा में अग्रणी कार्य किया है।

किसान भाईयों की आमदनी बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संरक्षित खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण आयोजित करके प्रशिक्षित कृषकों द्वारा पाली हाउस एवं नेट हाउस के माध्यम से वर्ष भर कीमती सब्जी उत्पादन करके अधिक आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। लाक डाउन के दौरान कृषकों को औद्योगिक उत्पादन को विकल्प करने के दौरान कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसान रथ एप के माध्यम से कृषक अपना उत्पाद बेचने में सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।



74^{वें}

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन



कृषि क्षेत्र में देश का प्रथम राष्ट्रीय वेबकान का शानदार आयोजन दिनांक 6 से 8 मई, 2020 तक किया गया। प्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमती आनन्दीबेन पटेल जी एवं कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही जी समेत देश के दिग्गज कृषि विशेषज्ञों ने आनलाइन अपने संदेश साझा किये। उद्घाटन के अवसर पर मुख्य वक्ता पद्म भूषण प्रो० राम बदन सिंह जी ने आधुनिक कृषि परिकल्पना की चर्चा की। उन्होंने इस अवसर पर 'स्वस्थ धरा तो काप हरा' का नारा देते हुये मृदा की सेहत सुधार के लिये जीवांश कार्बन के उपाय करने पर जोर दिया। इस दौरान देश के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, नीतिनिर्धारकों ने अपने विभिन्न व्याख्यानों, की-नोट एड्रेस द्वारा कृषि उत्पादन एवं सहयोगी प्रणाली के मजबूतीकरण एवं भावी योजना पर प्रस्तुती दी। विभिन्न विषयों पर 7 वेबिनार एवं 2 ऑनलाइन ऑनलाइन ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजन भी किया गया। ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से पठन-पाठन द्वारा सभी शेष पाठक्रमों को पूरा किया गया है। साथ ही जे०आर०एफ० एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता हेतु प्रत्येक विषय के 500 बहुविकल्पी क्वेश्चन बैंक तैयार की गयी है।

भावी योजनाएं

अब मैं CSA की भावी योजनाओं पर प्रकाश डालना चाहूँगा। जिससे हम कृषि उत्पादन एवं सहयोगी तन्त्र को मजबूती प्रदान करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर अपने आपको स्थापित कर सकें। इसमें हमें प्रसिजन एग्रीकल्चर, प्रोटेक्टिव एग्रीकल्चर, क्लाइमेट स्मार्ट नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेन्ट, क्लाइमेट स्मार्ट विलेज, स्ट्रेस, टारगेटेड एवं न्यूट्रीसन रिच प्रजातियों के विकास के साथ ही ड्रोन एवं नेनो टेक्नोलॉजी विकास प्रमुखतः एजेण्डा में होंगे। कृषि व्यवसाय प्रबन्धन में विशेषज्ञों की मांग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी है। इसे गति देने के लिए इंस्टीट्यूट/कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर बिजनेस मैनेजमेन्ट एवं पशु चिकित्सा की जरूरतों को पूरा करने के लिए College of Veterinary Science की स्थापना का प्रस्ताव विद्वत परिषद द्वारा पारित कर दिया है। इसे बोर्ड ऑफ मैनेजमेन्ट में पास कराकर शीघ्र शासन को प्रस्तुत किया जायेगा।

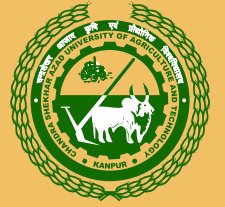
E-course Certificate Programme on/off line ABM विभाग एवं मशरूम में शीघ्र प्रारम्भ कर दिया जायेगा। छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास एवं अंग्रेजी भाषा में उत्कृष्टता हेतु कुछ कोर्स डिजाईन कर लिये गये हैं। इन्हें शीघ्र प्रारम्भ करने का प्रस्ताव भी प्रबन्ध मण्डल द्वारा अनुमोदित करा लिया जायेगा। छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु शॉर्ट टर्म कोर्स संचालित किये जायेंगे। ये कोर्स पाँच दिन, एक सप्ताह और एक महीने तक चलेंगे। इसके लिये विश्वविद्यालय प्रशासन किसी तकनीकी व निजी संस्थान से करार करेगा। डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन, प्लान्टेशन, जैविक खेती, एग्रोफॉरेस्ट्री सिस्टम, पुस्तकालय सुदृढीकरण एवं राजस्व अर्जन आदि भी मुख्य एजेण्डा में रहेंगे।

विश्वविद्यालय हरित कैम्पस बनाने के ऊपर फोकस करते हुये इको-क्लब बनाकर छात्र-छात्राओं की सहभागिता को बढ़ाये जाने, ऑनलाइन प्लेसमेंट, छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक फॉरेन डेपुटेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम में भेजने पर विशेष बल दिया जायेगा। इसके साथ ही स्टूडेंट सेंटरिक, फारमर्स सेंटरिक एवं पीपुल्स सेंटरिक, शोध, शिक्षण एवं प्रसार को प्राथमिकता में लाया जायेगा।





स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह



वर्ष 2019-20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक



श्री जय प्रकाश सिंह वर्ष 2016-17 में धान, गेहूँ एवं सरसों की खेती करके अपना जीवकोपार्जन कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, अलीगढ़ के सम्पर्क में आने के पश्चात् श्री सिंह ने पॉलीहाउस में सब्जियों की खेती करना प्रारम्भ किया साथही धान, गेहूँ एवं सरसों की खेती में भी उन्नतशील किस्मों एवं नवीन तकनीकियों को अपनाया। उत्पादित सब्जियों को 250-300 ग्राहकों को डोर टू डोर बेंचने की भी व्यवस्था के परिणामस्वरूप अधिक आय का सृजन हुआ। वर्ष 2016-17 में श्री सिंह की दो हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आयरु 89,000.00 थी, जो कि वर्ष 2019-20 में बढ़कर रू 6,96,000.00 हो गयी। जिससे रू 6,07,000.00 आय में वृद्धि हो गयी। पता : कैथवारी, लोधा, अलीगढ़



श्री यादराम कुशवाहा वर्ष 2016-17 तक पुरानी पद्धति से धान, गेहूँ, सरसों की खेती करते थे जिससे श्रम के अनुरूप आमदनी काफी कम थी। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अलीगढ़ के वैज्ञानिकों द्वारा पौध उत्पादन की तकनीकी प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण के पश्चात् श्री कुशवाहा द्वारा टमाटर, बैंगन, मिर्च, फूलगोभी, पत्ता गोभी आदि सब्जियों की पौध तैयार कर किसानों को बेंचने लगे। जिससे श्री कुशवाहा की आमदनी में कई गुना वृद्धि हुई साथ ही आस-पास के किसानों की आमदनी में गुणवत्तायुक्त पौध के प्रयोग से वृद्धि हुई। वर्ष 2016-17 में श्री कुशवाहा की सभी स्रोतों एवं 2.5 हे० क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय रू 2,10,000.00 थी जो वर्ष 2019-20 में बढ़कर रू 4,65,000.00 हो गयी। पता: मानपुर, खैर, अलीगढ़



श्री सर्वदीप सिंह एक सीमान्त कृषक हैं। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, कन्नौज द्वारा आय दुगुनी करने की तकनीकियों के अर्न्तगत इन्होंने फसल चक्र में परिवर्तन किया और खरीफ प्याज-गेहूँ के स्थान पर खरीफ प्याज-मैथा फसल चक्र को 0.16 हे० क्षेत्रफल पर अपनाया तथा मक्का-आलू-मक्का के स्थान पर धनियाँ (हरी पत्ती)-आलू-मूंगफली की खेती 0.16 हे० पर करना प्रारम्भ किया। धान-गेहूँ की खेती में हाइब्रिड व उन्नतशील प्रजातियों का समावेश किया। इसी के साथ पशुओं के भोजन, रोग व परजीवियों से रक्षा के उपाय अपनाए तथा वर्मी कम्पोस्ट इकाई को प्रारम्भ किया। इस प्रकार श्री सिंह की 2016-17 में वार्षिक आय रू 1,90,740.00 से बढ़कर वर्ष 2019-20 में रू 3,47,936.00 हो गई। पता : पचपुखरा, जलालाबाद, कन्नौज



श्री दिवाकर प्रताप सिंह एक छोटे किसान हैं जो पूरी तरह से कृषि तथा पशुपालन पर निर्भर हैं। गांव को वर्ष 2016-17 में अंगीकृत किये जाने के पूर्व इनकी वार्षिक आय कम थी जिसे वह अपने संसाधनों से बढ़ाना चाहते थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, कन्नौज द्वारा प्रदान की गई तकनीकी के उपरान्त वर्ष 2017-18 में इन्होंने ग्रीष्मकालीन मूँग के स्थान पर मक्का तथा ककड़ी के स्थान पर खीरा की खेती प्रारम्भ की। अकेले सब्जी मटर के स्थान पर सब्जी मटर + गेहूँ की खेती तथा आलू के साथ कद्दू की खेती करके कम उत्पादन लागत से उपज तथा आय दोनों में वृद्धि हासिल की। साथ ही देशी नस्ल के पशुओं के स्थान पर उन्नत नस्ल के पशुओं को अपनाकर व्यवसाय का रूप दिया।

श्री सिंह की वार्षिक आय वर्ष 2016-17 में रू 3,39,384.00 थी, जो खेती व पांच उन्नत नस्ल की भैंस तथा गाय से वर्ष 2019-20 में रू 7,13,584.00 हो गई। पता: रौतामई, तालग्राम, कन्नौज



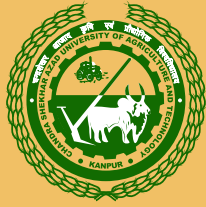
श्री राम किशोर वर्ष 2016-17 तक परम्परागत तरीके से धान, गेहूँ की खेती करते थे। जिससे उनको वांछित लाभ नहीं मिल पाता था। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर के सम्पर्क में आये औरगंदा की उन्नत प्रजातियों जैसे-पूसानारंगी, पूसाबसन्ती व जाफरी तथा सब्जियों की उत्पादन तकनीकी की जानकारी एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर 1.5 एकड़ जमीन में खरीफ, रबी व जायद में उन्नत खेती के साथ-साथ गेंदा व सब्जियों की व्यवसायिक खेती करना प्रारम्भ किया। जिससे उनकी 1.0 हे० क्षेत्रफल में आमदनी पहले की अपेक्षा दोगुनी हो गयी।

वर्ष 2016-17 में उनकी वार्षिक शुद्ध आय सभी स्रोतों से रू 1,00,000.00 थी, जो वर्ष 2019-20 में बढ़कर रू. 3,00,000.00 हो गई। पता: फूलपुर, मैथा, कानपुर देहात



74^{वें}

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह



श्री हरिशंकर दोनों पैरों से दिव्यांग हैं। वे खेती-किसानी के पैतृक कार्यों में थोड़ी मदद कर देते थे, उनके पास अपना कोई कार्य नहीं था। वर्ष 2015 में कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर ने उनके जज्बे को देखते हुए मुर्गी पालन की सलाह दी तदनुसार प्रशिक्षण दिया। जिससे श्री हरिशंकर द्वारा मुर्गी पालन का कार्य प्रारम्भ किया गया। वर्ष 2019-20 में 5000 मुर्गियों से बढ़कर आज 10000 मुर्गियां हैं व आज वह रु. 4,18,000.00 का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं। पता: फूलपुर, मैथा, कानपुर देहात



श्री पंकज कुमार प्रारम्भ में अपनी 1.5 हेक्टर क्षेत्र में धान-गेहूँ की परम्परागत खेती कर रु. 1.00 लाख प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे थे। वह 2017 में कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर के सम्पर्क में आये तथा वर्ष 2017-18 में उन्होंने फूलों व सब्जियों की खेती प्रारम्भ किया जिससे उनकी आमदनी दोगुनी से अधिक हो गयी। श्री कुमार की वर्ष 2016-17 में सभी स्रोतों से शुद्ध आय रु0 1,15,000.00 से बढ़कर वर्ष 2019-20 में रु. 2,80,000.00 का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं। पता: फूलपुर, मैथा, कानपुर देहात



श्री संतोष कुमार वर्ष 2016-17 तक धान-गेहूँ की परम्परागत खेती कर शुद्ध लाभ रु. 1.10 लाख प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे थे। नौकरी से अवकाश प्राप्त कर कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर के सम्पर्क में आये तथा प्रशिक्षण लिया तदुपरान्त वर्ष 2016-17 से दुग्धोत्पादन व सब्जियों की खेती करना प्रारम्भ किया जिससे उनकी आमदनी दोगुनी हो गयी। वर्ष 2016-17 में श्री संतोष कुमार जी की कुल शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष जहां रु0 1,10,000.00 थी, वर्ष 2019-20 में लगभग रु. 2,23,000.00 का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं। पता: झम्मा निवादा, मैथा, कानपुर देहात



श्री नीरज शर्मा द्वारा पुरानी पद्धतियों से गेहूँ, धान, सरसों, बैंगन व आलू की खेती कर रहे थे। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस द्वारा किसानों की दोगुनी आय के अंतर्गत चयनित ग्राम नगला गलिया के श्री शर्मा ने वैज्ञानिकों के सलाह पर अधिक उत्पादन देने वाली धान, गेहूँ व सरसों की नवीनतम प्रजातियों के साथ फसल प्रबन्धन किया एवं उन्नत नस्लों के पशुपालन के द्वारा आमदनी में बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी। वर्ष 2016-17 में किसान की आय सभी मदों से रु0 1,80,650.00 रुपये थी, जो वर्ष 2019-20 में बढ़कर रु0 3,55,785.00 हो गयी। पता: नगला गलिया, सासनी, हाथरस



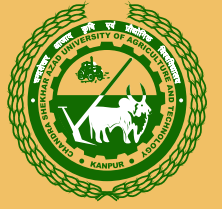
श्री रामगोपाल शर्मा एक छोटे किसान हैं जो कृषि एवं पशुपालन व्यवसाय से जुड़े हैं। वर्ष 2016-17 में वह गेहूँ, धान, सरसों तथा मूंग एवं उर्द की पुरानी उन्नतशील प्रजातियों की खेती कर रहे थे। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के सम्पर्क में आने के बाद इन्होंने मुख्य फसलों की नई उन्नतशील प्रजातियों का चुनाव किया। फसलों को रोग एवं कीटों से बचाव हेतु तकनीकियों को अपनाया परिणाम स्वरूप फसलों की उपज तथा आय में वृद्धि हुई। इसी बीच श्री शर्मा ने देशी नस्ल की भैंस को बदलकर मुरा तथा लाल सिंघी गाय का पालन, दुग्ध की बिक्री तथा वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना की। नवीन तकनीक तथा वैज्ञानिक ढंग से खेती के कारण वर्ष 2019-20 में इनकी शुद्ध आय रु0 3,85,730.00 पहुंच गई जो वर्ष 2016-17 में मात्र रु0 2,75,540.00 थी। पता: अहबरनपुर, मुरसान, हाथरस



श्रीमती शाक्य परम्परागत खेती के रूप में धान, गेहूँ और आलू फसल उत्पादन के साथ दोना-पत्तल और मोमबत्ती आदि का कार्य करके जीविकोपार्जन कर रही थी। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, इटावा के वैज्ञानिकों से सम्पर्क में आने के बाद वैज्ञानिक ढंग से धान, गेहूँ और आलू की फसल का उत्पादन प्रारम्भ किया। साथ ही साथ अधिक आय के लिए पोषक वाटिका तथा प्याज की खेती में विशेष रुचि लेने लगी। अचार बनाने हेतु छोटी उद्यम इकाई की शुरुआत करके वर्ष भर आय प्राप्त कर रही हैं। जिससे वर्तमान में उनकी आय दो गुनी हो गयी है। वर्ष 2017-18 से पूर्व उनकी शुद्ध आय रु0 61,600.00 थी जो वर्ष 2019-20 में रु0 1,42,000.00 शुद्ध आय प्राप्त हो रही है। पता: मिलोई, जसवन्त नगर, इटावा



स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह



श्री आनन्द कुमार वर्ष 2017-18 से पूर्व 3.25 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर धान, गेहूँ और सरसों की खेती स्थानीय तकनीकी के माध्यम से कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ग्राम को चयनित करने के उपरान्त उन्नतिशील प्रजातियों जैसे धान की संकर प्रजाति VNR-2233, गेहूँ की प्रजाति HD2967, K-607 और सरसों की प्रजाति RH-749 अपनाकर उत्पादन बढ़ाने में सफलता प्राप्त की।

गेहूँ की प्रजाति HD-2967 तथा धान की सुगन्धा प्रजाति का बीज उत्पादित कर जनपद के कृषकों को रुपये 30-35 प्रति किग्रा की दर से बिक्री करके शुद्ध आय में वृद्धि दर्ज की। परिणामस्वरूप वर्ष 2016-17 में शुद्ध आय ₹ 3,36,000.00 से बढ़कर वर्ष 2019-20 में ₹ 6,18,000.00 हो गयी है। पता: मामन, भरथना, इटावा



श्रीमती मिथलेश कुमारी ने वर्ष 2010-11 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के वैज्ञानिकों की सलाह से 80-100 कुन्तल वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन प्रारम्भ किया और उसको अपनी खेती में प्रयोग करके आलू का उत्पादन 360 कु/हे० तक प्राप्त किया। वर्ष 2016-17 में पुनः वैज्ञानिकों की सलाह पर क्राइजेन्थिमम, शिमला मिर्च की खेती प्रारम्भ की जिसके परिणामस्वरूप आमदनी दो गुना बढ़ गयी।

वर्ष 2016-17 में कुल 4.6 हे० क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय जहाँ ₹ 4,11,000.00 प्रति वर्ष थी वह वर्ष 2018-19 में बढ़कर ₹ 11,10,000.00 प्रतिवर्ष हो गई।

पता: बाड़ेपुर, बेवर, मैनपुरी



श्री राम औतार वर्ष 2016-17 में अपनी खेती के साथ-साथ भैंस पालन का कार्य कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने डेयरी इकाई की स्थापना के साथ पशु पोषण एवं पशु स्वास्थ्य पर ध्यान दिया। उन्नति खेती तथा पशुओं के गोबर से वर्मी कम्पोस्ट इकाई चलाने के फलस्वरूप उनकी आय दुगुनी होने में सफलता मिली।

वर्ष 2016-17 में दो भैंस तथा सम्पूर्ण खेती (1.10 हे०) से कुल आय ₹ 92,850.00 प्रति वर्ष की थी जो वर्ष 2019-20 में कुल शुद्ध आय ₹ 2,83,840.00 हो गई।

पता: भदौरा, पुल्तानगंज, मैनपुरी



श्री राम सिंह वर्ष 2016-17 से पहले परम्परागत खेती करते थे जिसमें धान, गेहूँ एवं सरसों शामिल थी। वर्ष 2016-17 में जब वे कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर के सम्पर्क में आये तो केन्द्र के वैज्ञानिकों के सलाह पर समन्वित कृषि प्रणाली स्थापित किया तथा धान-गेहूँ के साथ टिशू कल्चर केला प्रजाति जी-9 की खेती की शुरुआत की जिससे उनकी आमदनी दोगुनी से अधिक हो गयी। वर्ष 2016-17 में श्री सिंह की परम्परागत खेती से 3.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल आय ₹ 3,88,850.00 प्रति वर्ष थी जो वर्ष 2018-19 में ₹ 8,15,000.00 हो गयी।

पता: भारतपुर, हस्वा, फतेहपुर



श्री उमाशंकर तिवारी वर्ष 2016-17 से पहले पशुपालन के साथ परम्परागत तरीके से धान एवं गेहूँ की खेती करते थे। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर के सम्पर्क में आने पर उन्होंने फसल पद्धति में परिवर्तन कर तथा नवीन कृषि तकनीकी अपनाकर उन्नत प्रजातियों के गेहूँ, चना, सरसों, मूँग व मूँगफली की लाइन में बुवाई, बीज उपचार तथा सल्फर एवं माइक्रोराइजा का प्रयोग किया और अपने पशुपालन व्यवसाय को बढ़ाया जिससे उनकी आय में वृद्धि होने लगी।

श्री तिवारी की वर्ष 2016-17 में 1.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय ₹ 2,48,500.00 थी जो वैज्ञानिक तरीके से खेती व पशुपालन से वर्ष 2019-20 में ₹ 7,02,500.00 हो गयी।

पता: कटोघन, एरायां, फतेहपुर



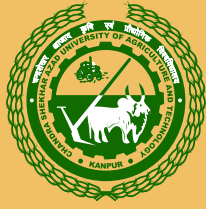
श्री बलवंत सिंह वर्ष 2017-18 से पहले धान, गेहूँ एवं सरसों की खेती करते थे परन्तु वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के सम्पर्क में आये और वैज्ञानिकों की सलाह पर धान की संकर प्रजाति, गेहूँ की डी0बी0डब्लू-17, के0-1006 व एच0डी0-2967 प्रजाति, सरसों की आर0एच-749 व आर्शीवाद के साथ जैव उर्वरक (हालो एजो + हालो पी0एस0बी0 + हालो जिंक) एवं माइक्रो न्यूट्रिशन का प्रयोग किया। आय वृद्धि हेतु मेष की खेती प्रारम्भ की जिसके परिणामस्वरूप उनकी आय दुगुनी हो गयी।

वर्ष 2016-17 से पहले श्री सिंह की कुल शुद्ध आय ₹ 89,440.00 प्रति वर्ष थी जो वर्ष 2018-19 में ₹ 3,13,740.00 प्रति वर्ष हो गयी। पता: दर्वेशपुर, बवना, हरदोई



74

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह



श्री महा सिंह वर्ष 2016-17 में अपने उपलब्ध संसाधनों में धान-गेहूँ एवं सरसों की खेती करते थे। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के सम्पर्क में आने से फसल अवशेष प्रबन्धन, नाडेप कम्पोस्ट, बायो डिकम्पोजर एवं हरी खाद के साथ फसल सुरक्षा प्रबन्धन किया। इसके अतिरिक्त मेंथा, आलू तथा घुईयां की खेती को अपनाकर अपनी आय में आशातीत वृद्धि दर्ज की।

वर्ष 2016-17 से पहले श्री सिंह की कुल शुद्ध आय ₹0 1,85,000.00 प्रति वर्ष थी जो वर्ष 2018-19 में ₹0 3,80,850.00 हो गयी।

पता: मुजाहिदपुर, बवन, हरदोई



श्री महेश कुमार वर्ष 2016-17 के पहले परम्परागत खेती करते थे जिससे अत्यधिक श्रम के बावजूद उनकी आमदनी काफी कम थी। परन्तु वर्ष 2017-18 में उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, लखीमपुर खीरी के वैज्ञानिकों की सलाह पर वैज्ञानिक विधि से परवल एवं गन्ने की खेती के साथ बुवाई की विधि, उर्वरक की मात्रा तथा रोग प्रबन्धन किया परिणामस्वरूप उनकी आमदनी दुगुनी हो गयी।

वर्ष 2016-17 में श्री कुमार की 1.25 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय जहां पर ₹0 1,54,500.00 थी वह 2019-20 में बढ़कर ₹0 3,15,000.00 हो गयी।

पता: झकरा पिपरी, फूलभर, लखीमपुर खीरी



श्री सोवरन लाल वर्ष 2017-18 के पहले परम्परागत तरीके से गेहूँ एवं गन्ने की खेती करने के कारण बहुत ही कम आमदनी प्राप्त होती थी। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, लखीमपुर खीरी के सम्पर्क में आने से गन्ने की प्रजाति, अन्तः फसली खेती, बुआई तकनीक में बदलाव के साथ उर्वरक प्रबन्धन, जल प्रबन्धन तथा खरपतवार नियन्त्रण के उपायों को अपनाया तथा पशुओं से अधिक दुग्धउत्पादन हेतु उनकी देख-रेख तथा भोजन पर विशेष ध्यान दिया जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई।

वर्ष 2017-18 में श्री सोवरन लाल की 1.2 हेक्टेयर भूमि से कुल शुद्ध आय ₹0 98,500.00 थी जो नई तकनीकी के अंगीकरण से वर्ष 2019-20 में बढ़कर ₹0 2,05,600.00 हो गयी। पता: बेहता, लखीमपुर खीरी



श्री रवी चन्द्र सिंह वर्ष 2017-18 से पहले गेहूँ, मक्का एवं आलू की खेती करते थे जिससे आमदनी कार्य के अनुरूप नहीं मिल पा रही थी परन्तु वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फर्रुखाबाद के सम्पर्क में आने के पश्चात् अपनी खेती में गर्मी की मूँगफली के साथ वैज्ञानिक विधि से मक्का, आलू एवं गेहूँ की खेती करना शुरू किया जिससे वर्ष 2018-19 में आमदनी दोगुनी हो गयी।

वर्ष 2017-18 से पूर्व श्री सिंह की 1.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय ₹0 1,20,543.00 होती थी, जो नवीन तकनीकियों को अपनाने से वर्ष 2018-19 में ₹0 2,50,475.00 हो गयी।

पता: नियामतपुर ठकुराम, कमलगंज, फर्रुखाबाद



श्री सालिग राम वर्ष 2016-17 तक स्थानीय ज्ञान तथा प्रजातियों को अपनाकर खेती करते थे जिससे उनकी आमदनी खेती के अच्छे प्रबन्धन के बावजूद लाभकारी नहीं थी। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फर्रुखाबाद के सम्पर्क में आने से पुरानी प्रजातियों को बदल कर मक्का की संकर प्रजाति डी0के0सी0-9108, आलू की प्रजाति-के0 पुखराज एवं हरा उर्द की प्रजाति-आई0पी0एम0 2-14 से खेती करने से आमदनी में दोगुना तक इजाफा हुआ।

वर्ष 2016-17 में कुल शुद्ध आय 1.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल में ₹0 1,53,500.00 प्रति वर्ष प्राप्त हो रही थी जो तकनीकी अपनाने से वर्ष 2019-20 में 3,15,000.00 हो गई।

पता: नगला जैतपुर, बारहपुर, फर्रुखाबाद



श्री दिवान सिंह वर्ष 2017-18 में 0.6 हेक्टेयर क्षेत्रफल में गेहूँ एवं बाजरा की खेती करते थे तथा परिवार के भरण-पोषण हेतु फ़ैक्ट्री में काम करना पड़ता था। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फिरोजाबाद के सम्पर्क में आने के पश्चात् चपन कददू की खेती प्रारम्भ तथा अन्य फसलों में उन्नत तकनीकी का प्रयोग करने से आमदनी वर्ष 2019-20 में दोगुनी तक पहुंच गयी।

वर्ष 2016-17 में 0.6 हेक्टेयर क्षेत्रफल में कुल शुद्ध आय ₹0 60,000.00 प्रति वर्ष प्राप्त हो रही थी जो तकनीकी अपनाने से वर्ष 2019-20 में बढ़कर ₹0 1,30,000.00 हो गई।

पता: दिनौली, टुण्डला, फिरोजाबाद



श्री राजवीर सिंह द्वारा वर्ष 2016-17 में गेहूँ एवं बाजरा की खेती करते थे। जिससे उनको आमदनी संतोषजनक प्राप्त नहीं हो पा रही थी। वर्ष 2017-18 में श्री सिंह द्वारा फसल पद्धति बाजरा-गेहूँ-मूँग एवं बाजरा-आलू-मूँग के साथ हरी खाद, बायो एजेंट, संतुलित उर्वरक एवं अच्छी नस्ल के पशुपालन से आय में दोगुना तक वृद्धि दर्ज की।

वर्ष 2016-17 में 3.2 हेक्टेयर क्षेत्रफल में कुल शुद्ध आय ₹ 3,50,000.00 प्रति वर्ष प्राप्त हो रही थी जो आलू की खेती तथा पशुपालन को अपनाने से वर्ष 2019-20 में बढ़कर ₹ 7,50,000.00 हो गई।

पता: खेरिया हजरतपुर, टुण्डला, फिरोजाबाद



श्री मिथलेश शर्मा अपनी 2.0 हे० कृषि योग्य भूमि में धान, गेहूँ, दलहन एवं तिलहन की खेती कर रहे थे। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली द्वारा जब इस गांव में कृषकों की आय दोगुनी करने के सम्बन्ध में कृषि तकनीकी हस्तांतरण कार्य प्रारम्भ किया गया तत्पश्चात श्री शर्मा ने कृषि की उन्नत तकनीकी जैसे संतुलित उर्वरक प्रबन्धन, एकीकृत नाशी जीव प्रबन्धन, वर्मीकम्पोस्ट, कार्बनिक पदार्थों का मृदा स्वास्थ्य सुधार में प्रयोग एवं धान, गेहूँ, दलहन एवं तिलहन की उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग कर अपनी फसलों के उत्पादन अभूतपूर्व वृद्धि प्राप्त की।

इस तरह से श्री शर्मा जी की वार्षिक शुद्ध आय जो वर्ष 2016-17 में ₹ 78,950.00 थी जो बढ़कर वर्ष 2019-20 में ₹ 1,76,750.00 हो गयी है। **पता:** आशानन्दपुर, सतांव, रायबरेली



श्री फूलचन्द अपनी 1.25 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि में धान, गेहूँ के साथ मुख्य रूप से टमाटर की खेती केशक्राप के रूप में करते हैं। टमाटर की फसल में फली छेदक कीट की वजह से उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता था। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली द्वारा जब इस गांव में कृषकों की आय दोगुनी करने के सम्बन्ध में कृषि तकनीकी हस्तांतरण कार्य प्रारम्भ किया गया तत्पश्चात् श्री फूलचन्द ने कृषि की उन्नत तकनीक जैसे संतुलित उर्वरक प्रबन्धन, टमाटर के पौधों के बीज उचित दूरी, उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग एवं फली छेदक कीट से बचाव के लिये फेरोमेनट्रैप का प्रयोग कर टमाटर के उत्पादन में वृद्धि प्राप्त की। अन्य फसलों में भी तकनीकी के प्रयोग से उपज एवं आय में वृद्धि हासिल की।

वर्ष 2016-17 में इनकी वार्षिक शुद्ध आय ₹ 1,20,000.00 थी जो वर्ष 2019-20 में बढ़कर ₹ 1,69,100.00 हो गई है। **पता:** आशानन्दपुर, सतांव, रायबरेली



श्री बजरंग सिंह पुत्र स्व० श्रीननकू सिंह का जन्म मार्च 13, 1959 ग्रामकोरसम, जनपदफतेहपुर(उ०प्र०) कृषक परिवार में हुआ। श्रीबजरंग सिंह जी ने जूनियर हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त कर, पिता जी के साथ कृषि योग्य 5.00 एकड़ भूमि पर खेती कर जीवकोपार्जन प्रारम्भ किया। श्री बजरंग सिंह विश्वविद्यालय में सितम्बर 05, 1992 से चन्द्रशेखर आजाद कृषक समिति सदस्य के रूप में सम्पर्क में आये तथा तब से लगातार विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीनतम तकनीकियों को अपनाकर अपनी आय में तीन गुना से अधिक की वृद्धि की और विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक को जनपद के 600 से अधिक कृषकों को अवगत कराया। श्री बजरंग सिंह के कृषि कार्यों में उत्कृष्ट योगदान हेतु वर्ष 2002 में चौधरी चरण सिंह सम्मान तथा वर्ष 2019 उ०प्र० के महामहिम राज्यपाल द्वारा भी सम्मानित किये गये। श्री बजरंग सिंह से आस पास के कृषक प्रेरणा लेकर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक को अपना कर लाभान्वित हो रहे हैं। **पता:** कोरसम, जनपद फतेहपुर



कैप्टन राजेन्द्र प्रसाद पचौरी द्वारा इण्टर मीडियट की शिक्षा प्राप्त कर भारतीय सेना में फरवरी 27, 1982 में देश की सेवा में योगदान किया तथा जूलाई 27, 2014 को सेना से सेवानिवृत्त के उपरान्त पिता जी के साथ कृषि योग्य 6.00 एकड़ भूमि पर खेती कर जीवकोपार्जन प्रारम्भ किया। श्री पचौरी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से वर्ष 2017 से सम्पर्क में आये तथा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की नवीनतम प्रजातियों को अंगीकृत कर बीज उत्पादन कर लाभ प्राप्त किया। इससे प्रेरित होकर श्रीपचौरी को मलिका किसान उत्पादन कम्पनी लिमिटेड (एफ०पी०ओ०) 11 जूलाई, 2018 गठन किया गया।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूँ की प्रजातियों (के-1317, के-607 व के-1008) का बीज उत्पादन कर कोमलिका किसान उत्पादन कम्पनी लिमिटेड के कृषकों को उपलब्ध कराकर उक्त प्रजातियों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा दोगुने से अधिक लाभ अर्जित किया। **पता:** भमरौला, अलीगढ़

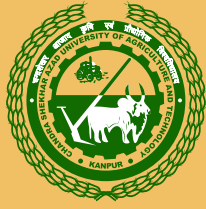


श्री धर्मपाल सिंह पुत्र श्री स्व० श्रीसुरेन्द्र सिंह का जन्म जुलाई 20, 1972 ग्राम सखाटप्पा, टिगाई, जिला कानपुर देहात (उ०प्र०) कृषक परिवार में हुआ। श्री धर्मपाल सिंह इन्टरमीडिएट विज्ञान वर्ग तक की शिक्षा प्राप्त कर पिताजी के साथ कृषि योग्य 8.00 एकड़ भूमि पर खेती कर जीवकोपार्जन प्रारम्भ किया। श्री धर्मपाल सिंह विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित एकीकृत कृषि प्रणाली योजना के सम्पर्क में वर्ष 2013-14 में आये तथा योजना द्वारा विकसित कृषि प्रणाली प्रारूप (फसल डेयरी) तकनीक को अपनाकर विगत चार वर्षों में दुगुनी से अधिक आय प्राप्त की तथा अपने गांव के आस-पास के 450 से अधिक कृषकों को कृषि की नवीनतम तकनीक की जानकारी देकर लाभान्वित भी किया है, जिससे आस-पास के कृषक प्रेरणा लेकर लाभान्वित हो रहे हैं। **पता :** टिगाई, जिला कानपुर देहात



74^{वें}

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह



श्री अश्वनी कुमार पुत्र स्व० श्री लल्लू प्रसाद का जन्म जून 11, 1963 ग्राम भारत सिंह का पुरवा, जिला कानपुर देहात (उ०प्र०) कृषक परिवार में हुआ। श्री अश्वनी जी स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त कर भारतीय सेना में सेवा की तथा वर्ष 2000 में सेवानिवृत्त के उपरान्त पिताजी के साथ कृषि योग्य 7.00 एकड़ भूमि पर खेती आरम्भ कर जीवकोपार्जन की शुरु किया। श्री अश्वनी कुमार विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित एकीकृत कृषि प्रणाली योजना के सम्पर्क में वर्ष 2013-14 में आये तथा योजना द्वारा विकसित कृषि प्रणाली प्रारूप (फसल डेयरी) तकनीक को अपना कर विगत चार वर्षों में दुगुनी से अधिक आय प्राप्त की तथा अपने गांव के आसपास के 550 से अधिक कृषकों को कृषि की नवीनतम तकनीक की जानकारी देकर लाभान्वित भी किया है, जिससे आस-पास के कृषक प्रेरणा लेकर लाभान्वित हो रहे हैं।

पता : पुरवा, कानपुर देहात



जय हिन्द!

